प्रेम का सामर्थ्य

अपने बच्चों के प्रति **प्रेम** के **कारण** हमारे पिता ने अपने पुत्र को भेजा कि वह उसके बच्चों के पापों का दंड चुकाए और उन्हें छुड़ा ले।

“क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया यूहन्ना 3:16

परमेश्वर पिता अपने पुत्र यीशु से **प्रेम** करता है (यूहन्ना 3:35 और 5:20) तथा यीशु भी अपने पिता से इतना **प्रेम** रखता है कि उसने **परमेश्वर की संतानों** को अपने लहू (प्रकाशितवाक्य 5:9) से मोल लेकर छुड़ाने के लिए अपना सब कुछ, यहाँ तक कि अपना प्राण भी दे दिया।

1 पतरस 1:18-19 क्योंकि तुम जानते हो कि तुम्हारा निकम्मा चालचलन जो बापदादों से चला आता है, उससे तुम्हारा **छुटकारा** चाँदी-सोने अर्थात् नाशवान् वस्तुओं के द्वारा नहीं हुआ; पर निर्दोष और निष्कलंक मेम्ने, अर्थात् मसीह के **बहुमूल्य लहू के द्वारा हुआ।**

और जो मूल्य चुकाया गया, वह **उसकी संतान के महत्व** को बताती है, और यह कि हमारा पिता और यीशु **हमसे** कितना अधिक **प्रेम** रखते हैं। हम **प्रेम** के परिवार हैं।

प्रेम ने हमारे **पिता** को कुछ **करने को प्रेरित किया**, **प्रेम** ने यीशु मसीह को **क्रियाशील** किया और एक **कार्य** दिया कि

लूका 19:10 . . . खोए हुओं को ढूँढ़ने और उनका उद्धार करने आया है -> लोग!

इस कार्य के लिए यीशु ने बहुत बड़ा मूल्य चुकाया ! !

और यह उसका महत्व बताता है जिससे वह प्रेम रखता है और जिसे मोल लेकर छुड़ाता है

परमेश्वर प्रेम है और जो कुछ वह करता है उसका आरम्भ **प्रेम** से होता है।

यह प्रेम हमारे **हृदय को जकड़ ले** तथा **हमें क्रियाशील** होने के लिए **प्रेरित करे**।

2 कुरिन्थियों 5:14-15 क्योंकि **मसीह का प्रेम** हमें ***जकड़ लेता और *विवश कर देता है**; इसलिये कि हम यह समझते हैं कि जब **एक सब के लिये मरा** तो **सब मर गए।** और वह इस निमित्त सब के लिये मरा **कि** जो जीवित हैं, **वे आगे को अपने लिये न जीएँ** परन्तु **उसके लिये** जो उनके लिये मरा और फिर जी उठा।

- *συνέχω पकड़ लेना या बंदी बना लेना (कैदी) आलंकारिक रूप से विवश करना
- जब हम इस **प्रेम** को **पूरी तरह से समझ जाते हैं** तो हम **आगे को अपने लिये न जीएँ परन्तु उसके लिये जीएँ जो हमारे लिये मरा और फिर जी उठा।**
- और हम लोगों से ऐसे **प्रेम** रखेंगे जैसे उसने उनसे **प्रेम** रखा।

उसने सब कुछ त्याग दिया और दास बन गया फिलिप्पियों 2

- जितना अधिक हम यह समझते हैं कि **वह हमसे** कितना अधिक **प्रेम** करता है, उतना ही अधिक हम **उससे प्रेम** करेंगे। हम इसलिये प्रेम करते हैं, कि पहले उसने हम से प्रेम किया। 1 यूहन्ना 4:19

केवल तब उस बड़ी आज्ञा का पूरी तरह से पालन किया जा सकता है :

हे गुरु, व्यवस्था में कौन सी **आज्ञा बड़ी** है?" उसने उससे कहा, "तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने **सारे** मन और अपने **सारे** प्राण और अपनी **सारी** बुद्धि के **साथ प्रेम** रख। **बड़ी और मुख्य** आज्ञा तो यही है। और उसी के समान यह **दूसरी** भी है कि तू **अपने पड़ोसी** से अपने समान प्रेम रख। मत्ती 22:36-39

बड़ी आज्ञा को मानने से आपको महान आज्ञा प्राप्त होगी, जैसे यीशु को हुई थी:

1 तीमुथियुस 1:5 आज्ञा का सारांश यह है कि **शुद्ध मन** और **अच्छे विवेक**, और **कपटरहित विश्वास** से **प्रेम** उत्पन्न हो।

1 यूहन्ना 4:7-8 हे प्रियो, **हम आपस में प्रेम रखें**; क्योंकि **प्रेम** परमेश्वर से है। **जो कोई प्रेम** करता है, **वह परमेश्वर से जन्मा** है और **परमेश्वर को जानता है।** (हम दूसरों से कितना प्रेम करते हैं, वह इस बात को दर्शाता है कि हम हमारे पिता के हृदय को कितना अधिक जानते हैं) 8 **जो प्रेम नहीं रखता** वह **परमेश्वर को नहीं जानता,** क्योंकि परमेश्वर प्रेम है।

लूका 10:1-3 इन बातों के बाद प्रभु ने **सत्तर और मनुष्य नियुक्त किए**, (उसने अब **आपको** सेवा के लिए बुलाया और नियुक्त किया है) और जिस-जिस नगर और जगह को वह आप जाने पर था, वहाँ उन्हें दो-दो करके अपने आगे भेजा। 2 उसने उनसे कहा, "पके

खेत बहुत हैं, परन्तु **मजदूर थोड़े हैं**; इसलिये खेत के स्वामी से **विनती करो** कि वह अपने खेत काटने को **मजदूर भेज दे**। 3 जाओ....

- यह वह धुन है जो यीशु की लोगों के लिए थी और यह प्रेम द्वारा प्रेरित थी।

17 वे सत्तर आनन्द करते हुए लौटे और कहने लगे, "हे प्रभु, तेरे नाम से दुष्टात्मा भी हमारे वश में हैं।" 18 उसने उनसे कहा, "मैं शैतान को बिजली के समान स्वर्ग से गिरा हुआ देख रहा था। 19 देखो, **मैं ने तुम्हें** साँपों और बिच्छुओं को रौंदने का, और शत्रु की सारी सामर्थ्य पर **अधिकार दिया है**; और किसी वस्तु से तुम्हें कुछ हानि न होगी। 20 तौभी इससे आनन्दित मत हो कि आत्मा तुम्हारे वश में हैं, परन्तु **इस से आनन्दित हो कि तुम्हारे नाम स्वर्ग पर लिखे हैं।"**

25 और देखो, एक व्यवस्थापक उठा और यह कहकर उसकी परीक्षा करने लगा, "हे गुरु, अनन्त जीवन का वारिस होने के लिये मैं क्या करूँ?" 26 उसने उस से कहा, "व्यवस्था में क्या लिखा है? तू कैसे पढ़ता है?" 27 उसने उत्तर दिया, "तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने **सारे** मन और अपने **सारे** प्राण और अपनी **सारी** शक्ति और अपनी **सारी** बुद्धि के साथ प्रेम रख; और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख।" 28 उसने उससे कहा, "तू ने ठीक उत्तर दिया, **यही कर** तो तू जीवित रहेगा।"

- एकमात्र तरीका कोई व्यक्ति ऐसा कर सकता है, वह **परमेश्वर के द्वारा है जो उनके हृदयों में बसनेवाला प्रेम है**।

- 1 यूहन्ना 4:7-8 हे प्रियो, **हम आपस में प्रेम रखें**; क्योंकि **प्रेम परमेश्वर से है। जो कोई प्रेम करता है, वह परमेश्वर से जन्मा** है और **परमेश्वर को जानता है। जो प्रेम नहीं रखता वह परमेश्वर को नहीं जानता, क्योंकि परमेश्वर प्रेम है।**

29 **परन्तु उसने अपने आप को धर्मी ठहराने** की इच्छा से यीशु से पूछा, **"तो मेरा पड़ोसी कौन है?"**

- हम कितनी बार अपने को धर्मी ठहराते हैं?? उन्होंने कहा ... " "उसने कहा ...

30 फिर यीशु ने उत्तर दिया और कहा:

एक मनुष्य यरूशलेम से यरीहो को जा रहा था कि **डाकुओं** ने घेरकर उसके कपड़े उतार लिए, और मार पीटकर उसे अधमरा छोड़कर चले गए।

- 1 यूहन्ना 4:7-8 हे प्रियो, हम आपस में प्रेम रखें; क्योंकि **प्रेम परमेश्वर से है**। जो कोई प्रेम करता है, वह **परमेश्वर से जन्मा है** और **परमेश्वर को जानता** है। 8 **जो प्रेम नहीं रखता वह परमेश्वर को नहीं जानता, क्योंकि परमेश्वर प्रेम है।**
- डाकुओं को **लोगों से कोई प्रेम नहीं था**, इसलिए **परमेश्वर के लिए भी प्रेम नहीं था।**

- **लोगों का कोई मूल्य नहीं।** उसके कपड़े और धन स्वयं उस व्यक्ति से ज़्यादा मूल्यवान थे। यह संसार के अधिकतर लोगों को दर्शाता है, और दुःख के साथ कहें तो ... बहुत से मसीहियों को भी।

- **डाकुओं को चाहिए था कि कोई उनसे प्रेम करे** और बताए कि परमेश्वर पिता और यीशु उनसे कितना प्रेम रखते हैं। उन्हें नया जन्म पाने की ज़रूरत थी ताकि वे परमेश्वर को जानें जो प्रेम है, और यह भी कि वे कितने मूल्यवान है - और परमेश्वर के लिए लोग कितने मूल्यवान है ... और इस प्रकार अपना जीवन बदलें।

31 और ऐसा हुआ कि उसी मार्ग से एक **याजक** जा रहा था, परन्तु उसे देख के **कतराकर चला गया**। 32 इसी रीति से एक **लेवी** उस जगह पर आया, वह भी उसे देख के **कतराकर चला गया।**

- याजक और लेवी संसार के कई धार्मिक अगुवों और लोगों को दर्शाते हैं। वे कहते हैं कि वे परमेश्वर से प्रेम करते हैं और कुछ कहते हैं कि वे लोगों से प्रेम करते हैं।

- 1 यूहन्ना 4:7-8 हे प्रियो, हम आपस में प्रेम रखें; क्योंकि **प्रेम परमेश्वर से है**। जो कोई प्रेम करता है, **वह परमेश्वर से जन्मा है** और **परमेश्वर को जानता है**। 8 **जो प्रेम नहीं रखता वह परमेश्वर को नहीं जानता, क्योंकि परमेश्वर प्रेम है।**

- संसार के कई धर्म कहते हैं कि वे परमेश्वर से प्रेम करते हैं लेकिन अक्सर कतराकर चले जाते हैं, या उससे भी बुरा, वे लोगों के साथ डाकुओं से भी बुरा व्यवहार करते हैं।

33 परन्तु **एक सामरी** यात्री (एक आम साधारण मनुष्य, धार्मिक नहीं) वहाँ आ निकला, और **उसे देखकर तरस खाया।** 34 उसने उसके पास आकर **उसके घावों** पर तेल और दाखरस डालकर **पट्टियाँ बाँधीं,** और अपनी सवारी पर चढ़ाकर **सराय में ले गया**, और **उसकी सेवा टहल की**। 35 दूसरे दिन उसने **दो दीनार** निकालकर सराय के मालिक को दिए, और कहा, **'इसकी सेवा टहल करना**, और जो कुछ तेरा और लगेगा, वह मैं लौटने पर **तुझे भर दूँगा।**' 36 अब तेरी समझ में जो डाकुओं में घिर गया था, इन तीनों में से उसका पड़ोसी कौन ठहरा?"

37 उसने कहा, "वही जिस ने उस पर दया की।" यीशु ने उससे कहा, "जा, तू भी ऐसा ही कर।"

हम महान आज्ञा को पूरा केवल तभी कर पाते हैं जब हम बड़ी आज्ञा का पालन करते हैं ... अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख।

- 1 यूहन्ना 4:7-8 हे प्रियो, हम आपस में प्रेम रखें; क्योंकि **प्रेम परमेश्वर से है।** जो कोई प्रेम करता है, वह **परमेश्वर से जन्मा** है और **परमेश्वर को जानता है**। 8 **जो प्रेम नहीं रखता वह परमेश्वर को नहीं जानता, क्योंकि परमेश्वर प्रेम है।**

- सामरी उससे कतराकर आगे नहीं गया। सड़क के किनारे पड़ा वह असहाय व्यक्ति, सामरी व्यक्ति के कार्य, नियोजन, समय और धन से अधिक महत्वपूर्ण और अधिक मूल्यवान था।

यीशु **प्रेम के सामर्थ्य** द्वारा प्रेरित और चालित था।

उसका जीवन प्रेम का प्रकटीकरण और घोषणा थी जिससे लोगों के बहुमुल्यता प्रमाणित होती थी!

लूका 2:49 तुम क्या नहीं जानते थे कि **मुझे** अपने पिता के भवन में होना **अवश्य है**? प्रेम द्वारा प्रेरित और चालित

लूका 4:43 **मुझे** अन्य नगरों में भी परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार सुनाना **अवश्य है**, क्योंकि मैं इसी लिये भेजा गया हूँ। प्रेम द्वारा प्रेरित और चालित

यूहन्ना 4:4-30 **उसको** सामरिया से होकर जाना अवश्य था ... प्रेम ने स्त्री का जीवन पूर्ण रूप से बदल दिया और उसे विश्वासी और प्रचारक बना दिया।

यूहन्ना 10:16 मेरी और भी भेड़ें हैं, जो इस भेड़शाला की नहीं। **मुझे उनको भी लाना अवश्य है**। प्रेम द्वारा प्रेरित और चालित वह उनसे कतराया नहीं

मत्ती 4:23 यीशु सारे गलील में **फिरता हुआ** उन के आराधनालयों में उपदेश करता, और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता, और लोगों की हर प्रकार की बीमारी और दुर्बलता को दूर करता रहा।

मत्ती 9:35-38 **यीशु** सब नगरों और गाँवों में **फिरता रहा** और उनके आराधनालयों में उपदेश करता, और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता, और हर प्रकार की बीमारी और दुर्बलता को दूर करता रहा। जब उसने **भीड़ को देखा तो उसको लोगों पर तरस आया,** क्योंकि वे उन **भेड़ों के समान जिनका कोई रखवाला न हो**, व्याकुल और भटके हुए से थे। तब उसने अपने चेलों से कहा, "**पके खेत तो बहुत हैं** पर **मजदूर थोड़े हैं**। इसलिये खेत के स्वामी से **विनती करो** कि वह अपने खेत काटने के लिए मजदूर भेज दे। प्रेम द्वारा प्रेरित और चालित

मत्ती 15:32 यीशु ने अपने चेलों को बुलाया और कहा, "मुझे इस **भीड़ पर तरस आता है,** क्योंकि वे तीन दिन से मेरे साथ हैं और उनके पास कुछ खाने को नहीं है। मैं उन्हें भूखा विदा करना नहीं चाहता, कहीं ऐसा न हो कि मार्ग में थक कर रह जाएँ।

लोगों के प्रति उसके प्रेम और उसकी करुणा ने उसको प्रेरित किया और कार्य करने को चालित किया। -> और उसको वह मिशन दिया : खोए हुओं को ढूँढ़ने और उनका उद्धार करना

लूका 8:1-3 इसके बाद वह नगर-नगर और गाँव-गाँव प्रचार करता हुआ, और परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार सुनाता हुआ **फिरने लगा,** और वे बारह उसके साथ थे, 2 और **कुछ स्त्रियाँ** भी थीं जो दुष्टात्माओं से और बीमारियों से **छुड़ाई गई** थीं, और वे ये हैं : **मरियम** जो **मगदलीनी** कहलाती थी, जिसमें से **सात दुष्टात्माएँ** निकली थीं, 3 और हेरोदेस के भण्डारी खुज़ा की पत्नी योअन्ना, और सूसन्नाह, और **बहुत सी अन्य** स्त्रियाँ। ये **अपनी सम्पत्ति से उसकी सेवा करती थीं।**

- **प्रेम ने पूर्ण रूप से उनके जीवन को बदल दिया**, उनको चंगा किया और स्वतंत्र कर दिया। वे यीशु के पीछे चलती थीं और उन्होंने अपना समय और धन उसे दिया।

- जब यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया तो मरियम मगदलीनी और दूसरी स्त्रियाँ भी **वहाँ थीं। क्योंकि वह उनसे प्रेम रखता था।** मत्ती 27:56
- जब यूसुफ ने यीशु की देह को ले जाकर अपनी कब्र में रखा और बड़ा पत्थर लुड़काकर उसे बंद कर दिया, ... तो मरियम मगदलीनी **वहाँ थी** मत्ती 27:61
- मरियम मगदलीनी और दूसरी मरियम जब **वहाँ भोर** को **पहुँचीं** तो भूडोल हुआ और एक स्वर्गदूत ने पत्थर लुड़का दिया और **उनको दिखाई दिया**। उसने कहा वह जी उठा है। और वे चेलों के पास यह शुभ सन्देश बताने के लिए दौड़ीं कि उन्हें **यीशु दिखाई दिया और उसने उनसे बात की**। मत्ती 28:1-10 पुनरुत्थित प्रभु को **सबसे पहले देखने वालों** में वे पहली थीं।

यिर्मयाह 29:13-14 तुम **मुझे ढूँढ़ोगे** और **पाओगे भी**; क्योंकि **तुम अपने सम्पूर्ण मन से मेरे पास आओगे।**

परमेश्वर को अपने पूरे मन से खोजने के लिए केवल प्रेम ही आपको विवश कर सकता है

- वे पुनरुत्थान के बाद **पहली** मिशनरी थीं जिन्हें दूसरों को सुसमाचार सुनाने की आज्ञा दी गई थी। उन्हें यह सम्मान उनके आपार प्रेम और **प्रभु के साथ हमेशा रहने के प्रयास के कारण प्राप्त हुआ था। वे उससे प्रेम करती थीं! क्यों??**
- लूका 7:47 इसके पाप जो बहुत थे, क्षमा हुए, क्योंकि **इसने बहुत प्रेम किया**; पर जिसका थोड़ा क्षमा हुआ है, वह थोड़ा प्रेम करता है।"
- बाकी के चेले डर के मारे छिपे हुए थे : सिद्ध प्रेम भय को दूर कर देता है; ... और जो भय करता है वह प्रेम में सिद्ध नहीं हुआ। 1 यूहन्ना 4:18
- जितना अधिक लोग **करुणा, देखभाल और चंगाई के द्वारा प्रेम अनुभव करते हैं** और जाने जाते हैं कि अनंत जीवन के लिए उनके पाप क्षमा कर दिए गए हैं (2 कुरिन्थियों.

5:19), उतना अधिक वे मरियम मगदलीनी और दूसरी स्त्रियों के समान परिवर्तित हो जाते हैं।

प्रेम उन्हें **कार्य** की ओर ले गया और उन्हें एक **मिशन** दिया

उदाहरण जारी है :

लूका 19:5-8 जब **यीशु** मिशन कार्य पर था और यरीहो में प्रवेश करके जा रहा था, तो प्रेम ने प्रवेश किया और जक्कई के जीवन को पूरी तरह बदल दिया। "हे प्रभु, देख, मैं अपनी आधी सम्पत्ति कंगालों को देता हूँ, और यदि किसी का कुछ भी अन्याय करके ले लिया है तो उसे चौगुना फेर देता हूँ।" "आज इस घर में उद्धार आया है, इसलिये कि यह भी अब्राहम का एक पुत्र है। क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोए हुओं को ढूँढ़ने और उनका उद्धार करने आया है।"

- प्रेम टलता नहीं। केवल प्रेम ही एकमात्र ऐसी प्रेरणा है जिसके पास लोगों के जीवनों को पूर्ण रूप से बदलने का सामर्थ्य है।

1 यूहन्ना 4:7-8 हे प्रियो, हम आपस में प्रेम रखें; क्योंकि **प्रेम परमेश्वर से है।** जो कोई प्रेम करता है, वह **परमेश्वर से जन्मा है** और **परमेश्वर को जानता है। जो प्रेम नहीं रखता वह परमेश्वर को नहीं जानता, क्योंकि परमेश्वर प्रेम है।**

1 पतरस 4:8 **सब में श्रेष्ठ** बात यह है कि **एक दूसरे से अधिक प्रेम रखो,** क्योंकि **प्रेम अनेक पापों को ढाँप देता है।**

मत्ती 18:21-22 तब पतरस ने पास आकर उस से कहा, “हे प्रभु, यदि मेरा भाई अपराध करता रहे, तो मैं कितनी बार उसे **क्षमा करूँ**? क्या सात बार तक?” 22 यीशु ने उससे कहा, “... सात बार के सत्तर गुने तक।

नीतिवचन 10:12 बैर से तो झगड़े उत्पन्न होते हैं, परन्तु **प्रेम से सब अपराध ढँप जाते हैं।**

नीतिवचन 17:9 **जो दूसरे के अपराध को ढाँप देता, वह प्रेम का खोजी ठहरता है**, परन्तु जो बात की चर्चा **बार बार** करता है, वह **परम मित्रों** में भी फूट करा देता है।

गलातियों 5:6 मसीह यीशु में न खतना और न खतनारहित कुछ काम का है, परन्तु केवल **विश्वास**, **जो प्रेम के द्वारा प्रभाव डालता है**। जैसे जैसे प्रेम बढ़ता है ... विश्वास भी बढ़ता है।

केवल पुरुषों के लिए

इफिसियों 5:25 हे पतियो, अपनी अपनी पत्नी से **प्रेम** रखो जैसा मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आप को उसके लिये दे दिया

इफिसियों 5:28-29 इसी प्रकार उचित है कि पति अपनी अपनी पत्नी से अपनी देह के समान **प्रेम** रखे। जो अपनी पत्नी से **प्रेम** रखता है, वह अपने आप से प्रेम रखता है। क्योंकि किसी ने कभी अपने शरीर से (पति और पत्नी एक शरीर हैं) बैर नहीं रखा वरन् उसका **पालन-पोषण** करता है, जैसा मसीह भी कलीसिया (अक्षरशः बुलाए हुओं) के साथ करता है।

इफिसियों 5:33 पर तुम में से हर एक अपनी पत्नी से अपने समान **प्रेम** रखे

1 कुरिन्थियों 16:13 जागते रहो, विश्वास में स्थिर रहो, पुरुषार्थ (पुरुष यीशु मसीह) करो, बलवन्त होओ। **जो कुछ करते हो प्रेम से करो।**

गलातियों 5:13-15 हे भाइयो, तुम स्वतंत्र होने के लिये बुलाए गए हो; परन्तु ऐसा न हो कि यह स्वतंत्रता शारीरिक कामों के लिये अवसर बने, वरन् **प्रेम से एक दूसरे के दास बनो।** क्योंकि सारी व्यवस्था इस एक ही बात में पूरी हो जाती है, **"तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख।"** पर यदि तुम एक दूसरे को दाँत से काटते और फाड़ खाते हो, तो चौकस रहो कि एक दूसरे का सत्यानाश न कर दो।

1 कुरिन्थियों 13:13 पर अब विश्वास, आशा, प्रेम ये तीनों स्थायी हैं, **पर इन में सबसे बड़ा प्रेम है।**

इफिसियों 5:1-2 इसलिये प्रिय बालकों के समान परमेश्वर का अनुकरण करो, **और प्रेम में चलो** जैसे मसीह ने भी **तुम से प्रेम किया**, और हमारे लिये **अपने आप को** सुखदायक सुगन्ध के लिये परमेश्वर के आगे भेंट करके **बलिदान कर दिया**।

इब्रानियों 10:24 और **प्रेम**, और भले कामों में **उस्काने** के लिये हम एक दूसरे की चिन्ता किया करें

यीशु के शब्दों में अपने शत्रुओं से "कैसे" प्रेम रखें

मती 5:39-48 परन्तु **मैं तुम से यह कहता हूँ कि बुरे का सामना न करना**; परन्तु जो कोई तेरे **दाहिने गाल पर थप्पड़ मारे, उसकी ओर दूसरा भी फेर दे।** यदि कोई तुझ पर नालिश करके तेरा कुरता लेना चाहे, **तो उसे दोहर भी ले लेने दे।** जो कोई तुझे कोस भर

बेगार में ले जाए, तो **उसके साथ दो कोस चला जा।** जो कोई तुझ से **माँगे**, उसे दे; और जो तुझ से उधार लेना चाहे, **उससे मुँह न मोड़।**

तुम सुन चुके हो कि कहा गया था, 'अपने पड़ोसी से प्रेम रखना, और अपने बैरी से बैर।' परन्तु मैं तुमसे यह कहता हूँ कि **अपने बैरियों से प्रेम रखो** और **अपने सतानेवालों के लिए प्रार्थना करो**, जिस से तुम **अपने स्वर्गीय पिता की सन्तान ठहरोगे** (परिपक्व संतान) क्योंकि वह भले और बुरे दोनों पर अपना सूर्य उदय करता है, और धर्मी और अधर्मी दोनों पर मेंह बरसाता है। क्योंकि **यदि तुम अपने प्रेम रखनेवालों ही से प्रेम रखो**, **तो तुम्हारे लिये क्या फल होगा?** क्या महसूल लेनेवाले भी ऐसा ही नहीं करते? **इसलिये चाहिये कि तुम सिद्ध बनो**, (या मानसिक और नैतिक चरित्र में पूर्ण) जैसा तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है

1 कुरिन्थियों 13:1-8 यदि मैं मनुष्यों और स्वर्गदूतों की बोलियाँ बोलूँ और **प्रेम** न रखूँ, तो मैं ठनठनाता हुआ पीतल, और झंझनाती हुई झाँझ हूँ। और यदि मैं भविष्यद्वाणी कर सकूँ, और सब भेदों और सब प्रकार के ज्ञान को समझूँ, और मुझे यहाँ तक पूरा विश्वास हो कि मैं पहाड़ों को हटा दूँ, परन्तु **प्रेम** न रखूँ, तो मैं कुछ भी नहीं। 3 यदि मैं अपनी सम्पूर्ण संपत्ति कंगालों को खिला दूँ, या अपनी देह जलाने के लिये दे दूँ, और **प्रेम** न रखूँ, तो मुझे कुछ भी लाभ नहीं। **प्रेम** धीरजवन्त है, और कृपालु है; **प्रेम** डाह नहीं करता; **प्रेम** अपनी बड़ाई नहीं करता, और फूलता नहीं, वह अनरीति नहीं चलता, वह अपनी भलाई नहीं चाहता, झुँझलाता नहीं, बुरा नहीं मानता।(गलत भावनाओं और कार्यों को बढ़ावा नहीं देता) कुकर्म से आनन्दित नहीं होता, परन्तु सत्य से आनन्दित होता है। वह सब बातें सह लेता है, सब बातों की प्रतीति करता है, सब बातों की आशा रखता है, सब बातों में धीरज धरता है।

प्रेम कभी टलता नहीं

इफिसियों 3:14-19 मैं इसी कारण उस पिता के सामने घुटने टेकता हूँ, जिस से स्वर्ग और पृथ्वी पर, हर एक घराने का नाम रखा जाता है, कि वह अपनी महिमा के धन के अनुसार तुम्हें यह दान दे कि तुम उसके आत्मा से अपने भीतरी मनुष्यत्व में सामर्थ्य पाकर बलवन्त होते जाओ; और विश्वास के द्वारा मसीह तुम्हारे हृदय में बसे कि तुम **प्रेम में जड़ पकड़कर और नेव डाल कर**, सब पवित्र लोगों के साथ भली-भाँति समझने की शक्ति पाओ कि उसकी चौड़ाई, और लम्बाई, और ऊँचाई, और गहराई कितनी है, और मसीह के उस **प्रेम** को **जान सको** जो ज्ञान से परे है कि **तुम परमेश्वर की सारी भरपूरी तक परिपूर्ण हो जाओ।**

परमेश्वर प्रेम है

1 यूहन्ना 4:7-8 हे प्रियो, हम **आपस में प्रेम रखें**; क्योंकि **प्रेम** परमेश्वर से है। जो कोई **प्रेम करता है**, वह **परमेश्वर से जन्मा है** और **परमेश्वर को जानता है**। 8 जो **प्रेम नहीं रखता** वह **परमेश्वर को नहीं जानता**, क्योंकि **परमेश्वर प्रेम है**।